RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-2 ● अंक-6 ● त्रैमासिक ● अप्रेल-जून, 2014

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	अनुवाद : आवश्यकता एवं उपयोगिता	प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र	06-13
2.	तीर्थंकर परिक्रमा	समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा	14-21
3.	बौद्धदर्शन में प्रतिपादित दुःख	प्रो. विजय कुमार जैन	22-27
4.	अणुव्रत आंदोलन और अहिंसा	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	28-30
5.	हिंदी का स्वरूप-यथार्थ और चुनौतियाँ	शम्भुनाथ तिवारी	31-36
6.	आधुनिक युग में योग का महत्व	डॉ. तुशार कान्त शास्त्री	37-38
7.	सीखने की विधि : अभिक्रमित-अनुदेशन	डॉ. बी.एल. जैन	39-41
8.	तरौहा अम्बिका प्रतिमा : एक अभिलेख	डॉ. आशीष कुमार दुबे	42-44
9.	किरातार्जुनीयम् में प्राचीन भारतीय राजतन्त्र	कृष्ण चन्द पण्डा	45-47
10.	Human right in 21st century : An over view	Dr.Ajay VardhanAcharya	48-57
	पुस्तक समीक्षा	तृप्ति त्रिपाठी	58

अणुव्रत आंदोलन और अहिंसा

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

अणुव्रत की प्राचीनता– अणुव्रत शब्द अर्वाचीन न होकर बहुत प्राचीन है। भगवान महावीर, जो जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे ने गृहस्थों एवं साधुओं (श्रमणों) के आचार में अंतर करते हुए अणुव्रत और महाव्रत का विधान किया था। तत्वार्थ सूत्र में अणुव्रत और महाव्रत के भेद को स्पष्ट करते हुए कहा गया है- 'देश सर्वतोऽणुमहती' अर्थात् अणुव्रत दैशिक या आंशिक है और महाव्रत सार्वभौमिक है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य गृहस्थों के लिए भी हैं और श्रमणों के लिए भी। दोनों में अंतर यह है कि श्रमणों के लिए इन व्रतों में किसी भी देश, काल, परिस्थिति एवं परिवेश की छूट नहीं है और श्रावकों अर्थात् गृहस्थों के लिए आवश्यक छूट है किन्तु अनावश्यक छूट यहाँ भी नहीं है। यहाँ भी अहिंसा अणुव्रत का विधान है। अहिंसा अणुव्रत भी एक प्रकार का व्रत है जिसमें अनावश्यक हिंसा न करने की प्रेरणा निहित है। गृहस्थों को तो आवश्यक हिंसा करनी ही पड़ती है जैसे कृषक खेती करेगा तो हिंसा होगी ही, माली बगिया की देखरेख करेगा तो हिंसा होगी ही किन्तु इन्हें भी अनावश्यक हिंसा की छूट नहीं है।

अणुव्रत आंदोलन और अहिंसा– तात्पर्य यह है कि कि अहिंसा का अणुव्रत से सम्बन्ध अतिप्राचीन है। इसी अणुव्रत की आवश्यकता को देखते हुए तथा इसके माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के लिए आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात आजादी के तुरन्त बाद किया था। उनका मानना था कि देश की गुलामी के पीछे मुख्य कारण राष्ट्रीय चरित्र का अभाव ही था। यदि दौलत खां लोदी, आम्भी, जयचंद, मीरजाफर, अमीचंद जैसे लोगों का राष्ट्रीय चरित्र होता तो क्या हमारा देश कभी गुलाम होता? अतः आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर अहिंसक व्यक्तित्व के निर्माण के साथ अहिंसक समाज संरचना की संकल्पना की थी। वे प्रायः कहा करते थे कि समस्त समस्याओं का कारण हिंसा है। समस्या है तो समाधान ढूंढना होगा। हिंसा समस्या का समाधान हिंसा से नहीं हो सकता क्योंकि कहा भी गया है- **'रक्तेन दूषितं वस्त्रं न ही रक्तेन शुद्धयति'** अर्थात खून से सना हुआ वस्त्र कभी खून से साफ नहीं हो सकता। अतः हिंसात्मक

समस्याओं का समाधान अहिंसा से ही संभव है। जब अहिंसक व्यक्तित्व और अहिंसक समाज का निर्माण हो जायेगा तो समस्याओं का स्वतः अकाल हो जायेगा। अतः प्रारंभ से ही अणुव्रत आन्दोलन का लक्ष्य अहिंसा रहा है। अणुव्रत आंदोलन का लक्ष्य अहिंसक समाज संरचना था तो साधन हृदय परिवर्तन था। अर्थात् साधन के रूप में भी अहिंसा का अणुव्रत आंदोलन से सम्बन्ध था। कार्लमार्क्स या मैकियावली की यह भावना कभी भी अणुव्रत आंदोलन से नहीं जुड़ी थी कि अपने क्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी भी साधन को अपनाया जा सकता है। अणुव्रत आंदोलन का हार्द यही था कि साध्य की पवित्रता के लिए साधन की पवित्रता अनिवार्य है। अणुव्रत आंदोलन में तोड़ फोड़ एवं हिंसात्मक कार्यवाही की कोई छूट नहीं है।

अणुव्रत की आचार संहिता और अहिंसा– वर्तमान में अणुव्रत आंदोलन की आचार संहिता में प्रथम तीन सूत्र तो सीधे हिंसा न करने एवं अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रथम सूत्र है कि हम किसी निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करेंगे। यह सूत्र हमें बड़े प्राणियों मनुष्य आदि की हिंसा ही नहीं अपितु छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं की भी हिंसा न करने की प्रेरणा देता है। दूसरा सूत्र है कि हम किसी पर आक्रमण नहीं करेंगे। किसी व्यक्ति या देश पर आक्रमण करने का मतलब हिंसा को बढ़ावा देना है। इस प्रकार का संकल्प हिंसा पर अवरोध लगाता है। तीसरा सूत्र है कि हम तोड़फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेंगे। तोड़फोड़ मूलक प्रवृत्तियाँ हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ हैं, इन पर अंकुश लगने से हिंसा सीमित होगी। आचार संहिता के अन्य सूत्र भी प्रकारान्तर से अहिंसात्मक भाव की ही पुष्टि करते है जैसे- हम मानवीय एकता में विश्वास रखेंगे, हम धार्मिक सहिष्णुता रखेंगे आदि सूत्र भी अहिंसा को बढ़ावा देते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि अणुव्रत आंदोलन की आचार संहिता अहिंसामय है। इसी प्रकार शिक्षकों, छात्रों, व्यापारियों, प्रत्याशियों की आचार संहिता भी अहिंसा से ओतप्रोत है।

अणुव्रत आंदोलन का उद्घोष एवं अहिंसा– अणुव्रत आंदोलन का मूल उद्घोष है- 'संयमःखलुजीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है। संयम शब्द अपने आप में बहुत बड़ा शब्द है जिसका अर्थ होता है अपने आवेगों, उद्वेगों, संवेगों का नियंत्रण कर हर परिस्थिति में सम रहना। संयम में न कोई चाह है, न वाह है और न आह है। जहाँ चाह है, वहीं वाह और आह है। चाह अर्थात् इच्छा की पूर्ति होने पर वाह अर्थात् प्रसन्नता स्वाभाविक है और पूर्ति न होने पर आह अर्थात् दुःख भी स्वाभाविक है। अतः यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि 'संयम' और अहिंसा अलग-अलग नहीं है। बिना अहिंसा के संयम का पालन संभव हो नहीं सकता। अन्य उद्घोष **'निज पर शासन फिर अनुशासन, इंसान पहले इंसान फिर हिन्दू या मुसलमान, सादा जीवन उच्च विचार, मानव जीवन का श्रृंगार'** भी अहिंसा के दर्शन को चरितार्थ करते हैं। सुप्रसिद्ध चिंतक एवं विचारक प्रो. राय अश्वनीकुमार ने लिखा है- "अणुव्रत के दार्शनिक भाष्यकार आचार्यश्री महाप्रज्ञ का मानना है कि आज का युग नैतिक समस्याओं का युग है। कुछ विकासशील गरीब देशों में अर्थ विषयक अनैतिकता चल रही है। कुछ विकसित देशों में चारित्र विषयक अनैतिकता चल रही है। समाज विषयक अनैतिकता मानवीय कृपा के रूप में अविकसित और विकसित दोनों देशों में चलती है। राजनीतिक विषयक अनैतिकता की भी यही स्थिति है। यह बहुरूपी अनैतिकता मानवीय दृष्टिकोण या आध्यात्मिक समानता की अनुभूति होने पर मिट सकती है। इस प्रकार के दृष्टिकोण के विकास के लिए 'संयम' आवश्यक है। (अणुव्रत के आयाम की भूमिका से)

अणुव्रत आंदोलन के कार्यक्रम और अहिंसा– अणुव्रत आंदोलन का सैद्धान्तिक स्वरूप ही अहिंसात्मक नहीं है अपितु इसका व्यावहारिक स्वरूप भी अहिंसात्मक है। अणुव्रत आंदोलन के मंच से जब-जब किसी की बुराई का विरोध किया गया तो उस विरोध का स्वरूप अहिंसात्मक ही रहा। अणुव्रत आंदोलन के मंच से समय-समय पर नशामुक्ति आंदोलन, रूढ़ि उन्मूलन, पर्दाप्रथा का विरोध, चुनाव शुद्धि अभियान, जनजागरण अभियान, मिलावट विरोधी अभियान चलाये गये किन्तु सारे अभियान एवं आंदोलन अंहिसात्मक ही रहे। अणुव्रत के कार्यकर्त्ताओं को समय-समय पर अहिंसा का प्रशिक्षण भी दिया जाता रहा है ताकि वे अपने-अपने क्षेत्र में शांति से कार्य कर सके।

देश में प्रायः जहां भी साम्प्रदायिक दंगे हुए वहां अणुव्रत के कार्यकर्त्ताओं ने शांति के लिए अहिंसात्मक पहल भी किये।

अणुव्रत गीत और अहिंसा– अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने में अणुव्रत गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन अणुव्रत गीतों ने भी अहिंसा को भरपूर बढ़ावा मिला है। अणुव्रत गीत की निम्न पंक्ति अहिंसा के भाव को परिपुष्ट करती है-

"मैत्री भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए,
समता, सहअस्तित्व, समन्वय नीति सफलता पाए,
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो।"

उपर्युक्त पंक्ति के एक-एक शब्द अहिंसा के स्वर का गुंजाने वाला हैं। इसी प्रकार दूसरे गीत में भी अहिंसा के भाव को देखा जा सकता है-

"मानवीय-मूल्यों की रक्षा अणुव्रत का आशय है।
अध्यात्मिकता, प्रामाणिकता उसका अमल हृदय है।
हिंसा के इस गहन तिमिर में अणुव्रत एक उजारा।"

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि अणुव्रत गीतों में भी अहिंसा को बढ़ावा दिया गया है।

अहिंसा समवाय और अहिंसा– अणुव्रत आंदोलन का सबसे नवीन कार्यक्रम अहिंसा समवाय है। दूसरे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अहिंसक शक्तियों को एकजुट करने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने 'अहिंसा समवाय' की अवधारणा को जन्म देकर यह अभिलाषा भी व्यक्त की है कि सभी अहिंसक शक्तियां एकजुट होकर कार्य करें तो लक्ष्य हासिल करना कठिन नहीं है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अहिंसा समवाय के अन्तर्गत अहिंसा प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया है। आचार्यश्री ने एक इंगित पर हजारों लोगों को अहिंसा का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। आचार्यश्री की दृष्टि के अनुरूप अणुव्रत शिक्षक ससंद ने अहिंसा प्रशिक्षण का जिम्मा लिया है और अनेक शिविरों के माध्यम से विद्यार्थी, श्रमिकों, शिक्षकों, ग्रामीणों, कैदियों को अहिंसा का प्रशिक्षण दिया। अहिंसा समवाय और अहिंसा प्रशिक्षण का कार्यक्रम पूरे देश में अणुव्रत समितियों एवं अणुव्रत शिक्षक संसद के माध्यम से चल रहा है। यह अति प्रांसगिक एवं अति उपयोगी कार्यक्रम है।

अतः यह कहना असंगतपूर्ण नहीं होगा कि अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभ से लेकर आज तक अणुव्रत आंदोलन और अहिंसा का चोली दामन का सम्बन्ध रहा है। अणुव्रत आंदोलन ने समय-समय पर अनेक उतार-चढ़ाव एवं झंझावत झेले हैं किन्तु कभी भी अहिंसा का दामन नहीं छोड़ा। यह कहना भी उपयुक्त होगा कि अगर आज अणुव्रत आंदोलन जीवित है, न केवल जीवित है अपितु दिन-प्रतिदिन विकास कर रहा है तो इसका कारण है अहिंसा। अस्तु यह कहना सार्थक होगा कि अणुव्रत आंदोलन की बुनियाद ही अहिंसा पर टिकी हुई है और इसकी सफलता में अहिंसा का महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ सूची –

1. अणुव्रत के आलोक में आचार्य तुलसी-आदर्श साहित्य संघ, चूरू
2. अणुव्रत गति-प्रभाति-आचार्य तुलसी- आदर्श साहित्य संघ, चूरू
3. अनैतिकता की धूप : अणुव्रत की छतरी- आचार्य तुलसी, आदर्श साहित्य संघ, चूरू
4. अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि-आचार्य महाप्रज्ञ-आदर्श साहित्य संघ, चूरू
5. अणुव्रत के आयाम- डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अणुव्रत शिक्षक संसद, राजसमन्द

निदेशक
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं-341306 (राज.)

♦ ♦ ♦